नीलमत पुराण के अनुसार कश्मीर शैव संप्रदायः इतिहास एवं परंपरा

मीनाक्षी जोशी एवं योगेन्द्र प्रसाद त्रिपाठी
https://doi.org/ 10.61410/had.v21i2.292

(प्रस्तुत शोधपत्र ICSSR, नई दिल्ली द्वारा प्रदत्त शोध परियोजनाए शीर्षकः भारतीय ज्ञान परम्परा में कश्मीरी शैव (सृष्टि विज्ञान और लोक परम्परा के विशेष सन्दर्भ में) के अन्तर्गत प्रकाशन हेतु प्रेषित है।)

नमस्ते शारदे देवि! कश्मीरपुरवासिनि।

त्वामहम् प्रार्थये नित्यं विद्यादानं च देहि मे॥

भारतमाता का उन्नत भाल है कश्मीर। हमारा गर्व है कश्मीर। इसकी प्राचीनता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि ऋग्वेद में यहाँ की प्रसिद्ध व पुरातन नदी वितस्ता का नाम हमें नदी. सूक्त में पढ़ने को मिलता हैः

इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति, शुतुद्रि स्तोमं सचता परुष्ण्या।

असिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तयार्जीकीये शृणुह्या सुषोमया॥

अर्थात् गंगा, यमुना, सरस्वती, शुतुद्रि, परुष्णा, असिक्ना मरुद्वृधा वितस्ता आर्जीकी एवं सुषोमा नदियाँ मेरे द्वारा सेवित हों एवं मेरी प्रार्थना सुनें।

शक्ति.संगमतंत्र में कश्मीर की सीमा का वर्णन किया गया। इसके अनुसार शारदामठ से कुंकुमाद्रि अर्थात् पामपुर तक का क्षेत्र काश्मीर कहलाता था–

शारदामठमारभ्य कुङ्कुमाद्रि तटान्तकम् ।

तावत् काश्मीर देश स्यात् पञ्चाशद्योजनान्तक :॥

नीलमत पुराण की भूमिका के द्वितीय अध्याय में प्रो॰ वेदकुमारी घई कहती हैं–"कश्यप ऋषि के इस प्रदेश के नामकरण के विषय में कई कल्पनाएँ हैं जैसे क अर्थात् जल तथा समीर अर्थात् वायु। वायु से सुखाया गया प्रदेश। क अर्थात् जल शिमिर अर्थात् सुखाना। जल सुखाने से उपजी भूमि।"

प्राचीन काल से ही कश्मीर नाम का ही उल्लेख मिलता है। आनन्द रामायण के यागकाण्ड के तृतीय सर्ग में यज्ञ के अश्व द्वारा दिग्भ्रमण करते हुए कश्मीर जाने के वर्णन में कहा है–

"देशं कैकेयमुल्लघ्य ययौ काश्मीरमुत्तमम्॥

- सहायक प्राध्यापक, संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
- पूर्व आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, का.सु.साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या

प्राचीन काल से ही कश्मीर नाम का ही उल्लेख मिलता है। आनन्द रामायण के यागकाण्ड के तृतीय सर्ग में यज्ञ के अश्व द्वारा दिग्भ्रमण करते हुए कश्मीर जाने के वर्णन में कहा है–

"देशं कैकेयमुल्लघ्य ययौ काश्मीरमुत्तमम्॥

नीलमत में इस घाटी को अधिकतर कश्मीरा कहा गया हैए कश्मीर को यहाँ के निवासी कशीर कहते हैंए जो कश्मीर या कश्वीर का विकसित रूप है। कल्हण भी राजतरङ्गिणी में कश्मीर और कश्मीरा दोनों नाम लिखते हैं। विष्णुधर्मोत्तर पुराण इसे वैतस्तिक अर्थात् वितस्ता का प्रदेश या कश्मीरा कहता है–

अभिसाराश्च कश्मीराश्चोदक्पूर्वेण कीर्तिता:॥

महाभारत में इसका नाम काश्मीर मिलता है–

काश्मीरमण्डलं चैतत् सर्वपुण्यमरिन्दम।

महाभारत सभा.पर्व में कश्मीर का उल्लेख मिलता है–

ततः काश्मीरकान् धीरान क्षत्रियान् क्षत्रियर्षभः ।
व्यजयल्लोहितं चैव मंडलेर्दशभिः सह॥

महाभारत के भीष्म पर्व में भी विभिन्न राजाओं के उल्लेख के साथ कश्मीर.राज का भी नाम आया है–

तिलामारा मसीराश्च मधुमन्तः सुकुन्दकाः।
कश्मीराः सिन्धुसौवीरा गान्धारादर्शस्तथा॥

इसके अतिरिक्त अन्य श्लोक इस प्रकार हैं:

द्राविडाः सिंहलाश्चैव राजा काश्मीरकस्तथा ।
कुन्तिभोजो महातेजाः पार्थिवो गौरवाहनः॥
काश्मीराश्च कुमाराश्च घोरका हंसकायनाः।
शिवि त्रिगर्त यौधेया राज्यन्या मद्रकैकयाः॥
कैकयान् मालवाश्चैव तथा काश्मीरकानपि।
अद्राक्षमहमाहूतान् यज्ञे ते परिवेषकान्॥
आवन्त्यान् दाक्षिणात्यांश्च पर्वतीयान् दशैरकान्।
काश्मीरकानौरसिकान् पिशाचांश्च समुद्गलान्॥

राजतरङ्गिणी श्लोक.२६ की पाद टिप्पड़ी में भाष्यकार श्री रघुनाथ सिंह लिखते हैं कि 'महाभारत के बाद पाणिनि और पतंजलि ने कश्मीर शब्द का उल्लेख किया है। टॉलमी (सन्१५०ई0) नामक यूरोपियन लेखक ने कश्मीर का नाम **कस्पीरा** दिया है। वराहमिहिर के वृहद्संहिता में कश्मीर का उल्लेख किया है। हुयेनसांग (सन ५४१) चीनी पर्यटक ने कश्मीर को 'किया शि मिलो' लिखा है जो कश्मीर का ही तद्भव रूप है। कश्मीरी लेखक क्षेमेन्द्र (सन् ९९०ई0) ने समयमातृका में कंकानी से कश्मीर का वर्णन कराया है। इसी समय प्रथम बार पंचाल धारा अर्थात् पीर.पंचाल या पीर.पेनुसल का उल्लेख किया गया। बिल्हण ने विक्रमांकदेवचरित के अंतिम अध्याय में काश्मीर का वर्णन किया है।'

अस्तु

उल्लेखनीय है कि प्राचीन काल से अब तक के सभी साहित्य में इस प्रदेश को कश्मीर और काश्मीर नाम से ही संबोधित किया गया है। नीलमत पुराण में कश्मीरा देवी की पूजा का उल्लेख है। देवी कश्मीरा की भूमि कश्मीर है।

श्रीमदादिशंकराचार्य अन्नपूर्णाष्टकस्तोत्र के सप्तम पद में देवी अन्नपूर्णा को "काश्मीरा" एवं "त्रिजलेश्वरी" कहते हैं। त्रिजलेश्वरी अर्थात् तीन प्रकार के जल वाली। सम्भवतः यह क्षीर भवानी है। यह श्रीनगर के तुलमुल गाँव में स्थित माँ राज्ञी का मंदिर है जो भगवती दुर्गा का ही एक रूप है। मान्यता है कि यह लंका से श्रीराम द्वारा लाकर स्थापित की गई है।

नीलमत पुराण के अनुसार कल्प के आरम्भ से छह मन्वन्तरों तक कश्मीर की भूमि पर छह योजन लम्बी और तीन योजन चौड़ी सतीसर नामक विशाल झील या सरोवर था।

यैव देवी उमा सैव कश्मीर नृपसत्तम।
आसीत् सरः पूर्णजलं सुरम्य सुमनोहरम॥
कल्पारम्भप्रभृति यत् पुरा मन्वन्तराणि षट्।
अस्मिन् मन्वन्तरे जातं विषयं सुमनोहरम्॥

सातवें मन्वन्तर में प्रजा को पीडित करने वाले और जल में छिपे जलोद्भव नामक एक दैत्य को मारने हेतु अन्य देवी देवताओं के साथ आए भगवान् विष्णु के आदेश पर अनन्त ने अपने हल से एक रास्ता बनाकर सरोवर का पानी बहा दिया। वह स्थान बारामुला या वराहमूल कहा जाता है ।

इन प्राप्त भूमि पर कश्यप ने मानवों को नागों (संभवतः वनवासी जनों) के साथ रहने के लिए कहा ।

देवर्षि नाग मुख्येष्वधिष्ठितेष्वथ कश्यपः।
उवाच वरदं विष्णुं देशोऽयं देव.मानुषैः ॥
वसतां रमणीयश्च पुण्यश्च भविता तथा ।
कश्यपो ब्रुवति त्वेवं नागा वचनमब्रुवन्॥

नाग एवं मानव दोनों ने अनमने ढंग से स्वीकार कर लिया। कश्यप ऋषि ने इन दोनों को पिशाचों के साथ रहने हेतु आदेश दिया। पिशाचों के साथ रहना नागों वा मानवों को स्वीकार न था अतः ऋषि ने पिशाचों को रेत के समुद्र या मरुस्थल में वर्ष में छह मास रहने का आदेश दिया।

अल्पवीर्या पिशाचाश्च भविष्यन्तीह सर्वदा।
वीर्योपेता गमिष्यन्ति षण्मासान् बालुकार्णवम्॥

भौगोलिक स्थिति भी इस मत को पुष्ट करती है। पीर पंजाल की पर्वत शृंखला का एक शिखर "नौबंधन" है । नौबंधन अर्थात् नाव बाँधने का स्थल। जन.मान्यता है कि जलप्रलय के समय मत्स्यावतार में भगवान् विष्णु ने इसी पर्वतशिखर पर नाव बाँधी थी ।

नीलमत कहता है कि महाभारत युद्ध में कश्मीर का बालक राजा होने के कारण सम्मिलित नहीं हो पाया था। तब श्रीकृष्ण ने बालक का साथ देने हेतु उसकी माता को सिंहासनासीन किया था।

इतिहास की दृष्टि से राजतरङ्गिणी में गोनन्दादि चार राजाओं का वर्णन किया है। नीलमत से पूर्व 52 राजाओं का इतिवृत्त प्रमाणों के अभाव दिखता है–

द्वापञ्चाशतमाम्नाय भ्रंशद्यान नास्मरन् नृपान्।
तेभ्यो नीलमताद् दृष्टं गोनन्दादिचतुष्टयम्॥

शैवमत–

निस्संदेह कश्मीर में प्राचीन काल से शिव की पूजा प्रचलित रही है। महाभारत में कहा है कि शिव व उमा की अर्चना व दर्शन कश्मीर में ही होते हैं–

इदामाश्चर्यमपर□ देशेऽस्मिन् पुरुषर्षभः।
क्षीणे युगे तु कौन्तेय शर्वस्य सह पार्षदैः॥
सहोमया च भवति दर्शन□ कामरूपिणः।
अस्मिन् सरसि सत्रैर्वै चैत्रे मासि पिनाकिनम्॥

'हे पुरुषश्रेष्ठ! यहाँ का दूसरा आश्चर्य है कि यहाँ रहने वाले साधक को युगान्त में उमा व पार्षदों के साथ शिव के दर्शन होते हैं। इस सरोवर के तट पर चैत्र मास में पिनाकधारी की पूजा.अर्चा व आराधना करते हैं'। कश्मीर में शिव को त्रिदेवों में से एक मानकर पूजा जाता रहा है:

ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च येषु शिखरेश्ववस्थिता।
तेषाञ्च नाम धेयानि ददुः स्वानि महीतले॥

कल्हण ने राजतरङ्गिणी में आरम्भ शिवाराधना करते हुए उन्हें भूषाभोगी कहा–

भूषाभोगिफणारत्नरोचिस्सिचयचारवे ।
नमः प्रलीनमुक्ताय हरकल्पमहीरुहे॥

अर्थात् उन भगवान् शिव को नमस्कार है जो सर्पों के आभूषण से आभूषित हैं, जिनका शरीर सर्पों के फनों में स्थित रत्नों की दीप्ति से प्रदीप्त है। जो कल्पतरु स्वरूप हैं और जिनमें मुक्तजन प्रलीन होते हैं ।

राजतरङ्गिणी में अनेक बार शिव पूजा तथा राजाओं द्वारा बनवाए गए शिव मन्दिरों का उल्लेख हुआ है।

शिव को भूतेश्वर भी कहा जाता है। इस प्रकार शिव को भूत पिशाचों के अधिपति वा लोकदेव के रूप में पूजकर उनमें अवैदिक रूप का आभास कराया गया।

कश्मीर में शिव का आठ रूपों में पूजन किया जाता है। यजमान पृथ्वी, आकाश, जल, अग्नि, चन्द्र, सूर्य और वायु के रूप में पूरे विश्व में व्याप्त है। यहीं शिव को त्रिगुणात्मक स्वरूप में भी नमन किया गया है।

नमस्ते देवदेवेश मायावृत्तं जगत्त्रयं ।
यजमानो मही खं च तोयाग्नीन्द्वर्कवायवः॥
तन्वस्ते विनिर्दिष्टा याभिर्व्याप्तं जगत्त्रयम् ।
ब्राह्मी तनुं तथास्थाय राजसीं त्वं जगद्गुरो॥
लोकन सृजति भूतात्मस्तव कार्यं न विद्यते ।
पौरुषीं तनुमास्थाय सात्त्विकीं त्वं महेश्वर॥
पालयस्यखिलं देव त्रैलोक्यं साक्षिवत् स्थितः।
कालाख्यां तामसीं कृत्वा जगत् संहरसे तथा॥

शिव को व्याल .यज्ञोपवीती भी कहा गया है । कश्मीर में शिव के वैदिक और अवैदिक दोनों स्वरूपों में पूजा होती रही। शान्त और शिव.स्वरूप को वैदिक माना गया। अवैदिक शिव का सम्बन्ध पिशाचों और राक्षसों के साथ रहा है। शिव.चतुर्दशी पर पिशाचाधिपति निकुम्भ शिव की पूजा करते थे। नीलमत में यह भी कहा है कि उस दिन निकुम्भ और पिशाचों की भी पूजा करना चाहिए:

पिशाचम्मृण्मयं कृत्वा काष्ठिकं वा द्विजसोत्तमः।
गन्धैर्माल्यैस्तथा वस्त्रैरलंकारैः प्रपूजयेत्॥
भक्ष्यैश्च लोपिकापूपैर्मासैः पानैस्तथैव च।
आयुधैर्विविधाकारैश्छत्रोपानहयःष्टिभिः ॥

उनके लिए मछली और माँस से युक्त बालियाँ (भोग) वृक्षों के नीचे, गलियों, चौराहों के साथ ही सूने घरों, पर्वत शिखरों तथा श्मशानों में भी रखना चाहिए ।

पूजनीयो निकुम्भस्तुपिशाचाधिपतिर्बली।
पिशाचानाम् च दातव्या बलयश्च सुसंस्कृताः॥
पललोलोपिकोमिश्रा मत्स्यमांसामिषैर्युता ।
वृक्षमूलेषुगोष्ठेषु गृहेषु विविधेष्वपि॥
चतुश्पथेषु रथ्यासु चत्वरेषु नदीषु च।
शून्यालयेषु मुख्येषु गिरीणां शिखरेषु च॥
अट्टालक.श्मशानेषु राजमार्गेषु काश्यप।
तां रात्रिं रक्षणं कार्यं बालकानां गृहे गृहे॥
भीमाक्षाय भुसुण्डाय व्यालयज्ञोपवीतिने॥

शिव एवं शक्ति में अभेद है। अतः उमा के बिना शिव की अर्चा वा चर्चा अपूर्ण है ।

उमाः

शिव पत्नी उमा को कश्मीर में शिव से बढकर सम्मान व स्थान मिला है। मान्यता है कि कश्मीर की भूमि उमा का ही स्वरूप है। सतीसर झील या सरोवर उमा का ही रूप था। सतीसर रिक्त होने पर उमा ने वितस्ता के रूप में कश्मीर में अपना स्थान बनाया।

कश्यपोवाच–

वितस्ताख्या सरिद्रूपा देवि त्वं पर्वतात्मजे ।
तपस्विनी परा शर्वाच्छर्व.पत्न्यसि नो नदी॥
आद्रिवत्सासि भद्रं ते तद्देहाच्छृङ्गिणी नदी ।
शम्भुनोढाधासि रूद्राणीस्त्रवन्त्यसि मयार्थिता॥

हिमालय की यह पुत्री पहले नीलवर्णा थीए बाद में हिमालय की एक शिखर पर तप किया। वही शिखर बाद में गौरीशिखर कहलाया।

नमोऽस्तु ते पर्वतराजकन्येए नमोऽस्तु तुभ्यमृषिवर्यजुष्टे ।
नमोऽस्तु तुभ्यं हरसङ्गलब्ध.पवित्रभावे वरदे वरेण्ये॥

सर्वज्ञात है कि उमा ही दुर्गा है। कश्मीर में दुर्गा तथा शारदा में भेद नहीं है। कश्मीर में दुर्गा मंदिर में ही पुस्तकों की पूजा का विधान है, वह शारदा के नाम से विख्यात हैः

'दुर्गा – गृहे पुस्तकानां पूजा कार्या तथा द्विजः।'

श्रीमद् आदिशंकराचार्य ने भी श्री अन्नपूर्णाष्टक के द्वितीय पद में भगवती को **'काश्मीराऽगरुवासिताङ्गरुचिरा'** अर्थात् काश्मीर के अगरु से सुवासित अंग वाली कहा है।

कश्मीर में शिव और उमा के पूजा की सरल विधि थी। इसे नीलमत के अनुसार शिवधर्म नाम से जाना जाता था। यह नवम शती तक शनैः शनैः विकसित और जटिल हो गई । जिसका उल्लेख श्री अभिनव गुप्त ने तन्त्रालोक में किया है।

आगम ग्रन्थ : शैवदर्शन का आधार आगम ग्रन्थों को माना जाता है। आगम ग्रन्थों में शिव एवं पार्वती का संवाद वर्णित है। आगमशास्त्र के स्रष्टा और वक्ता स्वयं भागवान् शिव माने जाते हैं। भगवान् शिव के द्वारा ही इनका ज्ञान ऋषियों को प्रदान कि था। इसी गुरु परम्परा से यह दर्शन शनैः शनैः विकसित होता रहा।

आगम को तन्त्र भी कहा जाता है। तन्त्र शब्द विस्तार अर्थावली 'तन्' धातु 'ष्ट्रन्' प्रत्यय करने पर निष्पन्न होता हैए जिसकी व्युत्पत्ति इस प्रकार है. 'तन्यते विस्तार्यते ज्ञानमनेन इति तन्त्रम्।"
अर्थात् वह शास्त्र जिसके द्वारा ज्ञान का विस्तार किया जाए उसे तन्त्र कहते हैं। शैवसिद्धान्त के प्रसिद्ध ग्रन्थ कामिकागम में तन्त्र को परिभाषित करते हुए कहा गया है 'तनोति विपुलानर्थान्, तन्त्रमन्त्र समन्वितान्। त्राणं च कुरुते यस्मात्, तन्त्रमिभिधीयते।। अर्थात् तन्त्र विपुल अर्थों के साथ तद् अनुसारी आचारणशील व्यक्तियों का त्राण करता है उसे तन्त्र कहते हैं। तन्त्र का दूसरा नाम आगम है। आगम शब्द को परिभाषित करते हुए आचार्य वाचस्पति मिश्र ने कहा है.'आगच्छन्ति बुद्धिमारोहन्ति यस्मात् अभ्युदयः.निःश्रेयसोपायाः स आगमः।'

अर्थात् अभ्युदय और निःश्रेयस के उपायों का प्रतिपादक शास्त्र आगम कहलाता है। स्वयं भगवान् शिव आगमों के स्रष्टा और वक्ता कहे जाते हैं।

शैवागमों में उल्लेख मिलता है कि लोकानुग्रह के लिए श्रीकण्ठ मूर्ति भगवान् शिव ने इनका ज्ञान ऋषियों को प्रदान किया था और उसके बाद शिष्य प्रशिष्य परम्परा से आगमों का ज्ञान जगत् में प्रचलित हो गया। 'शिवदृष्टि' में भी आचार्य सोमानन्द ने इसका उल्लेख करते हुए कहा है:

'स्थिता शिष्यप्रशिष्याद्यैर्विस्तीर्ण मठिकोदिता।

तदेवमेतद् विहितं मया प्रकरणं मनाक्।।

शैवदर्शन का आधार आगम ग्रन्थ ही माने जाते हैं। वस्तुतः शैवदर्शन की ज्ञानपरम्परा अत्यन्त विशाल है। काश्मीर शैवदर्शन के आगमों को मुख्यतः तीन भागों में विभाजित किया गया है।

1. द्वैतागम

2. अद्वैतागम

3. द्वैताद्वैतागम।

कश्मीर में उमामहेश्वर के अतिरिक्त अन्य देवों की भी पूजा के प्रमाण मिलते हैं। जैसे मार्तंड, ब्रह्मा, विष्णु, बलदेव आदि। इनके अतिरिक्त छन्दोदेव नामक लोकदेव की भी पूजा का प्रमाण मिलते हैं।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कश्मीर का और कश्मीर में शिवोपासना का प्राचीन इतिहास रहा है, दोनों साथ.साथ ही विकसित हुए। और यह भूमि कश्यप ऋषि की रही है।

सन्दर्भग्रन्थ सूची

1- ऋग्वेद10 / 75 / 05
2- शक्ति.संगमतंत्र भाग 3 / 7 / 9
3- नीलमत पुराण की भूमिका के द्वितीय अध्याय पृष्ठ 43
4- आनन्द रामायण, यागकाण्ड, 3 / 33
5- कल्हण, राजतरङ्गिणी, श्लोक 24
6- विष्णुधर्मोत्तर पुराण 1 / 9 / 10
7- महाभारत 3 / 130 / 10
8- सभापर्व 27 / 17
9- भीष्मपर्व 9 / 53
10- सभापर्व 34 / 12
11- सभापर्व 51 / 14
12- वनपर्व 51 / 26
13- द्रोणपर्व 11 / 16
14- राजतरङ्गिणी श्लोक. 26
15- नीलमत पुराण. 12
16- नीलमत पुराण 13
17- नीलमत पुराण 205
18- नीलमत पुराण 206
19- नीलमत पुराण 222

20- राजतरङ्गिणी, कल्हण 1/16
21- महाभारत वनपर्व 130 14.15
22- नीलमत पुराण 181
23- राजतरंगिणी 1.105.6, 107, 113
24- नीलमत पुराण 685.86
25- नीलमत पुराण 577.580
26- नीलमत पुराण 1129.1132
27- नीलमत पुराण 1138
28- नीलमत पुराण 314.315
29- नीलमत पुराण 270,607,815
30- नीलमत पुराण 270
31- नीलमत पुराण 819
32- विज्ञानभैरव विवृति, पृष्ठ संख्या .7
33- शिवदृष्टिए आस्निक .7/122
34- कामिकागम में उदृत ।
35- क्षेमराज, विज्ञानभैरवविवृत्ति, पृष्ठ संख्या.7
36- सोमानन्द.आस्निक, शिवदृष्टि, 7/122, पृष्ठ संख्या.298